(Difference between Facts of Knowledge)

ज्ञान के तथ्यों में अन्तर-

ज्ञान एवं शिक्षा का सम्बन्ध पूर्णतः घनिष्ठ है। जब ज्ञान होगा तभी शिक्षा का विकास होगा। शिक्षा के अतिरिक्त ज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी होते हैं जिनके बारे में हम विस्तार से वर्णन करेंगे-

(i) मूर्त एवं अमूर्त ज्ञान (Concrete and Abstract Knowledge)
(ii) स्थानीय एवं सार्वभौमिक ज्ञान

मूर्त एवं अमूर्त ज्ञान -

मूर्त एवं अमूर्त ज्ञान के आयामों में विभिन्नता पायी जाती है जिन्हे निम्न रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है।

मूर्त ज्ञान

मूर्त ज्ञान में अनेक प्रकार की विशेषता पायी जाती है। जो इस प्रकार है।

Scanned with CamScanner

(i) प्रामाणिकता :- (Confirmation) मूर्त ज्ञान की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए किसी विशेष प्रमाण की आवश्यकता नही है। क्योंकि मूर्त ज्ञान स्वयं एक प्रमाण है।

(ii) इन्द्रिय अनुभव :- मूर्त ज्ञान मे इन्द्रिय अनुभव ज्ञान की व्याख्या एवं वर्णन मे सहायता करता है। जैसे :- आँख :- के द्वारा देखकर ही वस्तु (पदार्थ) के बारे मे जानकारी प्राप्त करना।

(iii) निश्चित आकार :- मूर्त ज्ञान का आकार प्रकार भी निश्चित होता है। इसमे वस्तु की निश्चितता को भी स्पष्ट किया जा सकता है।

(iv) भाषायी वर्णन में निश्चितता :- मूर्त ज्ञान मे भाषायी वर्णन मे एकता व निश्चितता पायी जाती है। इसमे वर्णन करने वाले की संख्या कितनी भी हो परिणाम एक ही समान होगा।

अस्तित्व का उपस्थित होना :- मूर्त ज्ञान मे वस्तु हमारे समक्ष उपस्थित होती है अतः इसे सिद्ध करने मे कठिनाई नही होती है।

Scanned with CamScanner

विश्वसनीयता की उपस्थिति – मूर्त ज्ञान का प्रमुख अंग उसकी विश्वसनीयता है। इसे पृथक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता नहि होती है।

वैधता की उपस्थिति – मूर्त ज्ञान में वैधता की उपस्थिति होती है। वैधता के कारण ही मूर्त ज्ञान सरल होता है।

वास्तविक जगत से सम्बन्ध – मूर्त ज्ञान का सम्बन्ध वास्तविक जगत से होता है। इस ज्ञान का प्रस्तुतीकरण भौतिक जगत के विकास एवं वर्णन करने में किया जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूर्त ज्ञान प्रत्यक्ष, प्रामाणिक तथा यथार्थ जगत के लिए होता है। जिसे हम इन्द्रियों से समझ या जान सकते हैं।

अमूर्त ज्ञान (Abstract Knowledge)

अमूर्त ज्ञान का सम्बन्ध प्रायः तर्क, चिन्तन एवं विचारों से होता है। अमूर्त ज्ञान के विभिन्न आधारों को निम्न रूपों में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(i) तर्क एवं चिन्तन से सम्बन्ध — अमूर्त ज्ञान में किसी वस्तु का वर्णन व्यक्ति अपने तर्क एवं चिन्तन के आधार पर करता है। क्योंकि वस्तु इसमें प्रत्यक्ष नहीं होती है।

(ii) दर्शन से सम्बन्ध :- अमूर्त ज्ञान में दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का विकास भी दार्शनिक विचारधारा के आधार पर ही सम्भव होता है। जैसे - आदर्शवादी विचारधारा - सत्यम शिवम् सुन्दरम् पर आधारित होती है।

(ग) मनोविज्ञान से सम्बन्ध :- मनोविज्ञान का ज्ञान भी अमूर्त ज्ञान से सम्बन्धित होता है। इसमें रुचि, बुद्धि-लब्धि, समायोजन की क्षमता आदि विषय होते हैं। इनका अनुमान बालक के व्यवहार से लगाया जा सकता है।

(घ) वैधता का अभाव - अमूर्त ज्ञान में वैधता का भी अभाव पाया जाता है। क्योंकि इस प्रकार के ज्ञान को स्पष्ट रूप से प्रकट करने में कठिनाई होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अमूर्त ज्ञान के समस्त मानक विचार, दर्शन एवं कल्पना पर आधारित होते हैं।